Sixteenth Loksabha

an>

Title: Regarding employment generation in the country.

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण) : महोदया, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए आपका धन्यवाद ।...(व्यवधान)

महोदया, आज मैं एक बहुत प्रमुख समस्या बेरोजगारी की तरफ इस सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।...(व्यवधान) आज देश में बेरोजगारी एक सबसे बड़ी समस्या के तौर पर उभरी है।...(व्यवधान) मुझे माननीय प्रधान मंत्री जी की वर्ष 2014 की बात याद आती है कि उन्होंने उस समय कहा था कि हर साल दो करोड़ रोजगार दिए जाएंगे।...(व्यवधान) आज साढ़े चार साल हो चुके हैं। मुझे लगता है कि उसके मुताबिक आज तक नौ करोड़ जॉब लोगों को मिल जाने चाहिए थे।...(व्यवधान) आज Center for Monitoring Indian Economy के अनुसार तीन करोड़ से ज्यादा लोग रोजगार की तलाश में भटक रहे हैं। नेस्काम की रिपोर्ट के अनुसार हर साल तीस लाख से भी ज्यादा स्नातक, स्नातकोत्तर जॉब मॉर्केट में आते हैं, लेकिन केवल 25 प्रतिशत युवाओं को रोजगार हासिल करने में कामयाबी मिलती है। जो युवा बीच में पढ़ाई छोड़कर रोजगार तलाश करने लगते हैं, उनका कोई आंकड़ा हमारे पास नहीं है। वर्ल्ड बैंक के अनुसार हर साल 1.5 करोड़ भारतीय जॉब मॉर्केट में आते हैं। हमारे रोजगार कार्यालय रोजगार देने में लगातार असफल रहे हैं।

महोदया, आज देश भर के रोजगार कार्यालयों में करीब पाँच करोड़ से ज्यादा लोगों ने अपना नाम दर्ज करवा रखा है। लोक सभा में रोजगार मंत्रालय ने वर्ष 2015 में लिखित रूप में यह जवाब दिया है कि इन कार्यालयों के जरिए केवल शून्य प्रतिशत, मात्र 56 लोगों को ही रोजगार मिला है।

महोदया, बेरोजगारी एक बहुत बड़ी समस्या है। आज स्नातक, स्नातकोत्तर, यहाँ कि पी.एच.डी. और एम.बी.ए. की डिग्री लेने वाले युवा भी ओहदे से कम ओहदे वाले काम करने के लिए तैयार हैं।

मैडम स्पीकर, हाल ही में मध्य प्रदेश हाई कोर्ट में प्यून, ड्राइवर तथा वाचमैन के 738 पोस्ट्स के लिए भर्ती प्रक्रिया की गई। इसके लिए दो लाख से भी ज्यादा लोगों ने अर्जी की, जिसमें कई सिविल इंजीनियर्स भी थे।

माननीय अध्यक्ष: ठीक है, हमें भी मालूम है। आप थोड़े समय में ही अपनी बात रखिए। अपनी बात लंबे समय में मत कहिए, क्योंकि सभी को समय देना है।

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे: मैडम, आँकड़े देना भी जरूरी है।

माननीय अध्यक्ष: सभी को आँकड़े मालूम है। अपनी बात समाप्त कीजिए।

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे : मैडम, यह बेरोज़गारी की समस्या है। सरकार ने इसका डेटा देना ही बंद कर दिया है। प्रधानमंत्री जी ने स्वयं जुलाई महीने में एक मैगजीन में दिए गए इंटरव्यू में कहा था कि सरकार ने जॉब दिया है, लेकिन सरकार के पास जॉब का

डेटा नहीं है। पर-कैपिटा एनर्जी कंजम्प्शन भी विकास का एक मानक है। आज अन्य देशों के मुकाबले में हिन्दुस्तान सबसे निचले स्थान पर है। आज जो इंडस्ट्रीयल डिमांड ग्रोथ है, वह 5.9 प्रतिशत से कम होकर 3.1 प्रतिशत हो गई है। इसका मतलब है कि इंडस्ट्रीज़ में ज्यादा डिमांड नहीं है, इसलिए इंडस्ट्रीज़ कहां से जॉब देगी। लेबर ब्यूरो का भी यही आँकड़ा है।

मैडम स्पीकर, आज बेरोज़गारी की समस्या इस हद तक बढ़ गई है कि लोग मॉब लिचिंग पर उतर आए हैं। यह मैं नहीं कह रहा हूं, बल्कि हाल ही में राजस्थान के मुख्यमंत्री जी ने स्टेटमेंट दिया था कि आज लोगों को रोज़गार नहीं मिल रहा है, इसलिए लोग मॉब लिचिंग कर रहे हैं। सरकार से मेरा दरख्वास्त है, चूंकि बेरोज़गारी एक गंभीर विषय है, इसलिए सरकार इसे गंभीरता से लें और ज्यादा से ज्यादा रोज़गार जेनरेट करें।

माननीय अध्यक्ष: आप लोग किसी-किसी की बातें करते रहते हैं। गलत नहीं बोलना चाहिए। आप सभी थोड़ा बोलना सीखो।

श्री अरविंद सावंत,

श्री प्रतापराव जाधव,

श्री श्रीरंग आप्पा बारणे,

प्रो. रविन्द्र विश्वनाथ गायकवाड़,

श्री दुष्यंत चौटाला,

श्री राहुल शेवाले,

डॉ. प्रीतम गोपीनाथ मुंडे,

श्री भैरों प्रसाद मिश्र तथा

श्री रवीन्द्र कुमार जेना को डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।